International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 02-11-2024, Accepted: 03-12-2024, Published: 17-12-2024
Volume 10, Issue 4, 2024, Page No. 58-61

विभाजन की त्रासदी और 'जिन्दा मुहावरे': एक सामाजिक और साहित्यिक अध्ययन

ममता मिश्रा
हिंदी विभाग, श्री लाल बहादुर शास्त्री डिग्री कॉलेज, गोंडा, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश
नासिरा शर्मा का उपन्यास 'जिन्दा मुहावरे' भारतीय स्वतंत्रता और विभाजन के समय की त्रासदी को गहराई से उकेरने वाली एक महत्वपूर्ण साहित्यिक कृति है। यह उपन्यास विभाजन के दौरान और उसके पश्चात् के सामाजिक, सांस्कृतिक, और मानवीय संघर्षों का संवेदनशील चित्रण प्रस्तुत करता है। लेखिका ने विभाजन की पृष्ठभूमि में उत्पन्न मानसिक, सामाजिक, सांप्रदायिक, और पारिवारिक समस्याओं को बड़ी ही कुशलता से उभारा है। उपन्यास का कथानक रहमतुल्लाह और उनके परिवार के इर्द–गिर्द घूमता है, जो विभाजन के कारण मानसिक, सामाजिक, और सांस्कृतिक विछोह का सामना करते हैं। निजाम का पाकिस्तान जाना और वहां 'महाजिर' कहलाना, साथ ही अपने वतन की याद में तड़पते रहना, मानव पीड़ा का सजीव चित्रण है। सांप्रदायिक दंगों, धर्म आधारित हिंसा, और राजनीतिक षड्यंत्रों को भी उपन्यास में बड़ी प्रमुखता से प्रस्तुत किया गया है। इसके साथ ही, उपन्यास में पारंपरिक मान्यताओं, परंपराओं, और रूढ़ियों का मोह भी दिखाया गया है, जो विभाजन के बावजूद समाज पर अपना गहरा प्रभाव बनाए रखते हैं। महानगरीय जीवन की त्रासदी, जहां व्यक्ति स्वार्थ और भौतिकवाद में खो जाता है, भी उपन्यास में गहराई से उभरी है। नासिरा शर्मा का यह उपन्यास न केवल विभाजन की पीड़ा और त्रासदी को सामने लाता है, बल्कि समाज में व्याप्त समस्याओं का समाधान खोजने की प्रेरणा भी देता है। यह कृति विभाजन साहित्य में एक मील का पत्थर है, जो न केवल ऐतिहासिक घटनाओं को सहेजती है, बल्कि सामाजिक और मानवीय मूल्यों की पुनःस्थापना की दिशा में मार्गदर्शक भी है।

मूल शब्दः जिन्दा मुहावरे, विभाजन की त्रासदी, साहित्यिक अध्ययन

विभाजन साहित्य भारतीय साहित्य के इतिहास में एक ऐसा अध्याय है, जो अपने संवेदनशील और गहन विचारों के लिए विशेष रूप से जाना जाता है। यह साहित्य भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के पश्चात् हुए विभाजन की त्रासदी को सजीव रूप में प्रस्तुत करता है। विभाजन साहित्य, मानवीय वेदनाओं, सांस्कृतिक विघटन, और सामाजिक विडंबनाओं का दर्पण है, जो न केवल उस समय की घटनाओं को उजागर करता है, बल्कि उन समस्याओं के समाधान की दिशा में भी सोचने पर विवश करता है। विभाजन के समय लाखों लोग अपनी जड़ों से कटकर शरणार्थी बन गए। भाईचारे की भावना टूट गई और समाज सांप्रदायिकता, हिंसा और असमानता के दलदल में फंस गया। इसी पृष्ठभूमि में नासिरा शर्मा का उपन्यास 'जिन्दा मुहावरे' लिखा गया है। यह कृति न केवल विभाजन की त्रासदी को गहराई से व्यक्त करती है, बल्कि उन संघर्षों को भी उजागर करती है, जिनका सामना विभाजन के कारण समाज को करना पड़ा। उपन्यास का कथानक मानवीय पीड़ा, सांप्रदायिक संघर्षों, और सांस्कृतिक अस्थिरता के इर्द–गिर्द घूमता है। लेखिका ने बड़े ही संवेदनशील ढंग से विभाजन के कारण उत्पन्न समस्याओं जैसे जातिवाद, धार्मिक असहिष्णुता, पारिवारिक विघटन, और महानगरीय जीवन की त्रासदी को उजागर किया है। 'जिन्दा मुहावरे' में पात्रों के माध्यम से सांप्रदायिकता और राजनीति के जहर को दर्शाते हुए सामाजिक ताने–बाने को समझने की कोशिश की गई है। यह उपन्यास केवल ऐतिहासिक घटनाओं का दस्तावेज नहीं है, बल्कि समाज को आत्ममंथन का अवसर प्रदान करता है। विभाजन के दुष्परिणामों और उसकी पीड़ा को प्रस्तुत करते हुए यह साहित्य मानवीय मूल्यों और सह–अस्तित्व की भावना को पुनर्जीवित करने का प्रयास करता है। इस प्रकार, नासिरा शर्मा का 'जिन्दा मुहावरे' विभाजन साहित्य में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

विभाजन की त्रासदी और उसकी अभिव्यक्ति

मानसिक और सामाजिक संघर्ष

मानसिक और सामाजिक संघर्ष नासिरा शर्मा का उपन्यास 'जिन्दा मुहावरे' विभाजन के समय की मानसिक और सामाजिक संघर्षों की सजीव तस्वीर प्रस्तुत करता है। विभाजन केवल भूगोल का बंटवारा नहीं था, बल्कि यह मानव समाज की मानसिकता, परंपराओं, और भावनाओं का भी विखंडन था। उपन्यास में विभाजन के कारण उत्पन्न मानसिक अस्थिरता और सामाजिक संघर्ष को गहराई से उकेरा गया है। मानसिक संघर्ष का एक प्रमुख उदाहरण निजाम का अपने वतन भारत को छोड़कर पाकिस्तान जाने का निर्णय है। निजाम अपने परिवार को छोड़कर एक नई पहचान और संभावनाओं की तलाश में जाता है, लेकिन वहां 'महाजिर' के रूप में उसे सामाजिक स्वीकार्यता नहीं मिलती। दूसरी ओर, उसके परिवार वाले भारत में रहकर वतन से जुड़ी भावनाओं और अपने प्रियजनों से बिछड़ने के दर्द को झेलते हैं। लेखिका ने इन संघर्षों को बहुत ही प्रभावी ढंग से चित्रित किया है। निजाम का निर्णय न केवल उसका व्यक्तिगत संघर्ष है, बल्कि यह विभाजन के कारण समाज में आई अस्थिरता और असमंजस का प्रतीक है। उपन्यास में यह दिखाया गया है कि कैसे यह मानसिक अस्थिरता परिवारों को विखंडित करती है और उनकी पारिवारिक संरचना को तोड़ती है। सामाजिक संघर्ष के पहलू में, विभाजन के समय उत्पन्न सांप्रदायिक दंगे और हिंसा समाज के भीतर की दरारों को उजागर करते हैं। रहमतुल्लाह जैसे पात्रों के माध्यम से यह दिखाया गया है कि लोग अपने वतन से प्यार तो करते हैं, लेकिन सामाजिक और राजनीतिक कारणों से उन्हें अपनी जड़ों को छोड़ना पड़ता है। नासिरा शर्मा का यह उपन्यास मानसिक और सामाजिक संघर्षों के माध्यम से विभाजन के दुष्परिणामों को उजागर करता है। यह दर्शाता है कि विभाजन ने न केवल भौगोलिक सीमाएं खींचीं, बल्कि मानवीय संबंधों और भावनाओं को भी विखंडित कर दिया। यह साहित्यिक कृति इस

त्रासदी को समझने और उससे सीख लेने का अवसर प्रदान करती है।

साम्प्रदायिकता और राजनीतिक संघर्ष

नासिरा शर्मा का उपन्यास 'जिन्दा मुहावरे' विभाजन के समय की साम्प्रदायिकता और राजनीतिक संघर्षों का सजीव चित्रण करता है। विभाजन के समय हुए सांप्रदायिक दंगे और राजनीतिक उथल–पुथल ने भारतीय समाज को गहरे जख्म दिए। लेखिका ने इन घटनाओं को बहुत ही प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया है, जो न केवल उस समय की परिस्थितियों को समझने में मदद करता है, बल्कि समाज पर उनके गहरे प्रभाव को भी उजागर करता है। उपन्यास में सांप्रदायिक दंगों के भयावह चित्रण ने विभाजन की त्रासदी को और अधिक वास्तविक बना दिया है। उदाहरण के तौर पर, जब सफर कर रहे निर्दोष मुसाफिरों पर हथियारबंद लोगों द्वारा हमला होता है, उनकी हत्या की जाती है, और महिलाओं का अपहरण होता है, तो यह विभाजन के समय के क्रूर यथार्थ को दर्शाता है। इस प्रकार की हिंसा ने न केवल हजारों परिवारों को तबाह किया, बल्कि समाज के भीतर घृणा और असुरक्षा की भावना को भी जन्म दिया। सांप्रदायिकता के साथ–साथ, राजनीतिक संघर्ष भी उपन्यास का एक महत्वपूर्ण पहलू है। विभाजन केवल दो देशों के बीच का बंटवारा नहीं था, बल्कि यह राजनीतिक स्वार्थ और सत्ता की महत्वाकांक्षा का परिणाम था। इस राजनीति ने समाज को विभाजित कर दिया और सांप्रदायिक हिंसा को बढ़ावा दिया। उपन्यास में दिखाया गया है कि कैसे राजनीतिक साजिशों ने आम लोगों की जिंदगी को प्रभावित किया। उदाहरण के लिए, रहमतुल्लाह और उसका परिवार इस बात का प्रतीक है कि विभाजन ने किस प्रकार समाज में विघटन और अविश्वास की भावना को जन्म दिया। निजाम का पाकिस्तान में जाकर 'महाजिर' बन जाना और वहां भी सांप्रदायिकता का शिकार होना, यह दर्शाता है कि यह संघर्ष किसी एक स्थान तक सीमित नहीं था। नासिरा शर्मा ने बड़ी संवेदनशीलता के साथ इस उपन्यास में सांप्रदायिकता और राजनीतिक संघर्षों को प्रस्तुत किया है। यह कृति न केवल विभाजन के समय की समस्याओं को दर्शाती है, बल्कि उन समस्याओं के समाधान की दिशा में सोचने का अवसर भी प्रदान करती है।

धार्मिक समस्या

नासिरा शर्मा का उपन्यास 'जिन्दा मुहावरे' विभाजन के समय की धार्मिक समस्याओं को अत्यंत संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत करता है। यह उपन्यास दर्शाता है कि कैसे विभाजन के दौरान धार्मिक असहिष्णुता ने समाज को विखंडित कर दिया और धर्म के नाम पर हिंसा और विघटन की प्रवृत्तियों को बढ़ावा मिला। विभाजन के समय, धार्मिक असहिष्णुता ने समाज में गहरे घाव छोड़े। उपन्यास में इस असहिष्णुता को बड़ी ही सूक्ष्मता से दर्शाया गया है। उदाहरण के लिए, जब मोअज्जिन पाकिस्तान चले जाते हैं और मस्जिद में अजान की परंपरा बाधित हो जाती है, यह धार्मिक विघटन का एक प्रतीकात्मक चित्रण है। यह घटना दिखाती है कि कैसे विभाजन ने न केवल भूगोल को बांटा, बल्कि धार्मिक परंपराओं और विश्वासों को भी तोड़ा। धार्मिक समस्याओं का चरम उस समय दिखाई देता है जब लोगों के धार्मिक अनुष्ठान बाधित हो जाते हैं। मस्जिद में अजान न होने की समस्या केवल एक धार्मिक संकट नहीं थी, बल्कि यह विभाजन के कारण हुए सांप्रदायिक तनाव और असुरक्षा का प्रतीक थी। यह स्थिति उस समय की सामाजिक विडंबना को उजागर करती है, जहां धार्मिक परंपराएं भी राजनीति और सांप्रदायिकता के कारण प्रभावित हुईं। लेखिका ने यह भी दिखाया है कि कैसे धर्म का उपयोग राजनीतिक महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति के लिए किया गया। विभाजन के दौरान और उसके बाद धर्म को एक हथियार की तरह प्रयोग किया गया, जिससे समाज में घृणा और असहिष्णुता फैल गई। लोग अपने धर्म को बचाने के लिए संघर्ष करते दिखते हैं, लेकिन समाज में धार्मिक सहिष्णुता की भावना समाप्त हो चुकी होती है। 'जिन्दा मुहावरे' में धार्मिक समस्या केवल सांप्रदायिकता तक सीमित नहीं है, बल्कि यह धर्म और समाज के बीच के अंतः संबंधों की जटिलता को भी दर्शाती है। यह उपन्यास धार्मिक विघटन और उसके सामाजिक प्रभावों को समझने का एक उत्कृष्ट उदाहरण है।

परंपराओं और रूढ़ियों का मोह

नासिरा शर्मा का उपन्यास 'जिन्दा मुहावरे' विभाजन के समय की उन पारंपरिक और रूढ़िवादी सोचों को उजागर करता है, जिन्होंने समाज और व्यक्तियों की मानसिकता को गहराई से प्रभावित किया। उपन्यास में यह स्पष्ट होता है कि विभाजन के बाद भी पारिवारिक परंपराएं और रूढ़िवादी सोच लोगों की जिंदगी का अभिन्न हिस्सा बनी रहीं। उपन्यास के पात्रों के माध्यम से लेखिका ने दिखाया है कि कैसे परंपराएं व्यक्ति के जीवन में जकड़न बनकर सामने आती हैं। सुगरा और उसकी माँ के संवाद इस बात को उजागर करते हैं कि कैसे एक बेटी की शादी जैसे मुद्दे पर भी समाज के रीति–रिवाज और परंपराएं हावी रहती हैं। सुगरा की माँ कहती है, जमाना औरत के लिए हमेशा एक जैसा रहता है। लड़का अच्छा मिलते ही व्याह दो।" यह संवाद उस समय की परंपरागत सोच को दर्शाता है, जहां औरतों को उनकी स्वतंत्रता या इच्छा से अधिक परंपराओं के दायरे में बांधकर देखा जाता था। परंपराओं के इस मोह को निजाम और सुगरा के परिवारों के निर्णयों में भी देखा जा सकता है। विभाजन के बाद, जब सामाजिक संबंधों और पारिवारिक संरचनाओं पर संकट आया, तब भी परंपराओं का पालन करना एक महत्वपूर्ण मुद्दा बना रहा। उपन्यास में दिखाया गया है कि कैसे सुगरा के पिता समाज में प्रतिष्ठा बनाए रखने के लिए अपनी बेटी की शादी से जुड़े निर्णय लेते हैं। लेखिका ने यह भी दिखाया है कि परंपराएं अक्सर मनुष्य के जीवन में कठोरता और असहमति का कारण बनती हैं। पारंपरिक सोच के कारण व्यक्तियों को अपने व्यक्तिगत निर्णयों और सामाजिक अपेक्षाओं के बीच संतुलन बनाना कठिन हो जाता है। 'जिन्दा मुहावरे' में परंपराओं का मोह केवल सांस्कृतिक या सामाजिक बाध्यता नहीं है, बल्कि यह विभाजन के समय की मानसिकता और समाज में व्याप्त रूढ़िवादी सोच का प्रतीक है। यह उपन्यास दिखाता है कि कैसे परंपराओं और रूढ़ियों ने विभाजन के बाद भी समाज को प्रभावित किया और व्यक्तियों के जीवन में चुनौतियां उत्पन्न कीं।

समाज और साहित्य का अंतः संबंध

नासिरा शर्मा का उपन्यास 'जिन्दा मुहावरे' विभाजन के समय की सामाजिक, सांस्कृतिक, और राजनीतिक समस्याओं का सजीव और यथार्थपरक चित्रण प्रस्तुत करता है। यह कृति न केवल साहित्यिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है, बल्कि समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से भी एक अद्वितीय स्थान रखती है। यह उपन्यास समाज और साहित्य के बीच गहरे अंतःसंबंध को उजागर करता है, जो साहित्य को समाज का दर्पण बनाता है।

विभाजन की त्रासदी का सामाजिक प्रभाव

विभाजन के दौरान समाज ने भयंकर उथल–पुथल का सामना किया। सांप्रदायिक हिंसा, सामाजिक विखंडन, और व्यक्तिगत त्रासदियों ने समाज के ताने–बाने को छिन्न–भिन्न कर दिया। 'जिन्दा मुहावरे' में यह त्रासदी अपने पात्रों की पीड़ा और उनके संघर्षों के माध्यम से सजीव होती है। उपन्यास में रहमतुल्लाह और उनका परिवार विभाजन के बाद की सामाजिक अस्थिरता

का प्रतीक हैं। निजाम का पाकिस्तान जाना और वहां 'महाजिर' के रूप में पहचाना जाना इस बात को दर्शाता है कि विभाजन ने न केवल भौगोलिक सीमाएं खींची, बल्कि समाज को भी गहराई से विभाजित कर दिया।

सांस्कृतिक विघटन और जातिवाद

उपन्यास में सांस्कृतिक विघटन और जातिवाद का यथार्थ चित्रण किया गया है। विभाजन ने न केवल समाज को विभाजित किया, बल्कि सांस्कृतिक पहचान को भी खंडित किया। पाकिस्तान में बसे महाजिरों की स्थिति यह स्पष्ट करती है कि वहां भी जातिवाद और क्षेत्रीयता ने अपनी जड़ें जमा लीं। "पाकिस्तानी कोई नहीं, यहां केवल सिंधी, पंजाबी, और बलोची हैं," यह संवाद बताता है कि सांस्कृतिक विघटन ने मानवीय एकता को किस प्रकार कमजोर किया।

धार्मिक असहिष्णुता और उसका प्रभाव

धार्मिक असहिष्णुता विभाजन का एक और बड़ा पहलू है, जिसे नासिरा शर्मा ने गहराई से चित्रित किया है। मस्जिद में मोअज्जिन की अनुपस्थिति और धार्मिक अनुष्ठानों का बाधित होना इस असहिष्णुता का प्रतीक है। उपन्यास में यह दिखाया गया है कि कैसे धर्म का उपयोग राजनीतिक महत्वाकांक्षाओं को पूरा करने के लिए किया गया। लेखिका ने धार्मिक असहिष्णुता के दुष्प्रभावों को न केवल दिखाया, बल्कि उस पर समाधान का भी संकेत दिया है।

रूढ़िवाद और परंपराओं का मोह

उपन्यास में रूढ़िवादी सोच और परंपराओं के मोह को भी प्रमुखता से उभारा गया है। सुगरा और उसके पिता के संवाद यह दर्शाते हैं कि कैसे समाज में परंपराओं को बनाए रखने की चाह ने व्यक्तिगत इच्छाओं और स्वतंत्रता को दबा दिया। लेखिका ने यह दिखाया है कि परंपराओं का मोह कैसे समाज को आगे बढ़ने से रोकता है।

राजनीतिक पहलू और साम्प्रदायिकता

'जिन्दा मुहावरे' विभाजन की राजनीति और सांप्रदायिकता के घातक प्रभावों का भी विश्लेषण करता है। लेखिका ने विभाजन को केवल भूगोल का बंटवारा नहीं, बल्कि राजनीतिक स्वार्थ और सत्ता की लालसा का परिणाम बताया है। सियासत के चलते परिवारों का बंटवारा और समाज में घृणा का बढ़ना उपन्यास में बार–बार उभरता है।

समाज में सुधार की संभावनाएं

लेखिका ने उपन्यास के माध्यम से विभाजन के बाद समाज में सुधार की संभावनाओं को भी रेखांकित किया है। उन्होंने जातिवाद, रूढ़िवाद, और धार्मिक असहिष्णुता को चुनौती देते हुए सामाजिक एकता और सहिष्णुता की भावना को प्रोत्साहित किया है। उपन्यास में रहमतुल्लाह और निजाम जैसे पात्र यह संदेश देते हैं कि पारिवारिक और सामाजिक एकता के बिना समाज प्रगति नहीं कर सकता।

साहित्य का समाज पर प्रभाव

साहित्य समाज का दर्पण होने के साथ–साथ, समाज को दिशा देने का भी कार्य करता है। नासिरा शर्मा का यह उपन्यास समाज में व्याप्त समस्याओं को न केवल उजागर करता है, बल्कि उनके समाधान के लिए प्रेरित भी करता है। यह कृति दिखाती है कि साहित्य केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं, बल्कि समाज को शिक्षित और प्रेरित करने का साधन भी है।

'जिन्दा मुहावरे' समाज और साहित्य के गहरे अंतः संबंध का सटीक उदाहरण है। यह उपन्यास विभाजन की त्रासदी के सामाजिक, सांस्कृतिक, और राजनीतिक पहलुओं का साहित्यिक प्रतिबिंब प्रस्तुत करता है। लेखिका ने विभाजन से उपजे जातिवाद, रूढ़िवाद, और धार्मिक असहिष्णुता को चुनौती देते हुए समाज में सुधार की संभावनाओं को दिखाया है। यह कृति न केवल विभाजन साहित्य का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, बल्कि समाज को आत्ममंथन और सुधार की दिशा में सोचने के लिए प्रेरित भी करती है।

निष्कर्ष

नासिरा शर्मा का 'जिन्दा मुहावरे' विभाजन साहित्य में एक अनमोल कृति है, जो भारतीय स्वतंत्रता और विभाजन के समय की त्रासदियों, संघर्षों, और सामाजिक विडंबनाओं को बड़ी गहराई और संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत करता है। यह उपन्यास न केवल ऐतिहासिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है, बल्कि यह मानव समाज में व्याप्त समस्याओं और विडंबनाओं को साहित्यिक रूप से उजागर करता है। विभाजन केवल भूगोल का विभाजन नहीं था, बल्कि यह समाज, संस्कृति, और व्यक्तिगत जीवन को भी गहराई से प्रभावित करने वाला एक मानवीय संकट था। 'जिन्दा मुहावरे' इस त्रासदी को उसकी पूरी जटिलता के साथ समझने का अवसर प्रदान करता है।

यह उपन्यास विभाजन के समय की सामाजिक और सांस्कृतिक विघटन की त्रासदी को समझने का मार्गदर्शन करता है। सांप्रदायिक दंगों, धार्मिक असहिष्णुता, और जातीय विघटन ने न केवल लोगों को उनके घरों और जड़ों से उखाड़ फेंका, बल्कि उनके मानसिक और भावनात्मक जीवन को भी गहराई से प्रभावित किया। रहमतुल्लाह और निजाम जैसे पात्र इस त्रासदी के केंद्र में खड़े हैं, जो सामाजिक और पारिवारिक विखंडन के प्रतीक बन जाते हैं। निजाम का पाकिस्तान जाकर 'महाजिर' बन जाना और अपने वतन की याद में जीना, इस बात को दर्शाता है कि कैसे विभाजन ने व्यक्तिगत पहचान और सामूहिक अस्तित्व को चुनौती दी। उपन्यास में लेखिका ने सामाजिक विडंबनाओं और सांस्कृतिक विखंडन के साथ–साथ धार्मिक असहिष्णुता को भी प्रभावी ढंग से उकेरा है। मस्जिद में अजान की अनुपस्थिति और धार्मिक अनुष्ठानों का बाधित होना इस बात का प्रतीक है कि विभाजन ने धार्मिक और सांस्कृतिक मूल्यों को भी क्षतिग्रस्त किया। यह कृति न केवल इन समस्याओं को उजागर करती है, बल्कि इनसे उबरने और एक बेहतर समाज की कल्पना करने की प्रेरणा भी देती है। पारंपरिक सोच और रूढ़िवादी मानसिकता का मोह भी उपन्यास का एक महत्वपूर्ण पहलू है। सुगरा और उसके परिवार के माध्यम से लेखिका ने दिखाया है कि कैसे समाज में परंपराओं का पालन करने की बाध्यता ने व्यक्तियों की स्वतंत्रता और उनके जीवन के निर्णयों को सीमित कर दिया। उपन्यास यह भी दिखाता है कि विभाजन के बाद भी समाज पर पारंपरिक और रूढ़िवादी सोच का गहरा प्रभाव बना रहा। साहित्य और समाज के बीच के गहरे संबंध को यह उपन्यास बार–बार रेखांकित करता है। 'जिन्दा मुहावरे' न केवल विभाजन की त्रासदी का साहित्यिक दस्तावेज है, बल्कि यह समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह साहित्यिक कृति पाठकों को मानवीय संवेदनाओं और सामाजिक वास्तविकताओं के प्रति जागरूक करती है। विभाजन के कारण उत्पन्न जातिवाद, सांप्रदायिकता, और सांस्कृतिक विखंडन पर विचार करते हुए यह उपन्यास समाज में सुधार और सहिष्णुता की आवश्यकता को रेखांकित करता है। 'जिन्दा मुहावरे' में विभाजन की त्रासदी के साथ–साथ उस समय के राजनीतिक संघर्षों और सत्ता की महत्वाकांक्षाओं को भी उजागर किया गया है। लेखिका ने यह स्पष्ट किया है कि कैसे राजनीतिक स्वार्थ और सांप्रदायिकता ने

समाज को विभाजित किया और मानवीय मूल्यों को कमजोर किया। यह कृति पाठकों को यह सोचने पर मजबूर करती है कि विभाजन की त्रासदी केवल उस समय तक सीमित नहीं थी, बल्कि इसके प्रभाव आज भी समाज और राजनीति में दिखाई देते हैं।

अंततः, नासिरा शर्मा का यह उपन्यास न केवल विभाजन की त्रासदी का सजीव चित्रण है, बल्कि यह मानवीय मूल्यों, सामाजिक एकता, और सांस्कृतिक सहिष्णुता की आवश्यकता को भी सामने लाता है। यह उपन्यास केवल अतीत की घटनाओं को याद करने का माध्यम नहीं है, बल्कि यह भविष्य के लिए एक सबक भी है। यह कृति पाठकों को यह संदेश देती है कि समाज में वास्तविक प्रगति और शांति तभी संभव है, जब हम जातिवाद, सांप्रदायिकता, और विभाजन की सोच से ऊपर उठकर एक सहिष्णु और समावेशी समाज का निर्माण करें। 'जिन्दा मुहावरे' साहित्य और समाज के अंतः संबंध को समझने और उसे एक बेहतर दिशा देने की प्रेरणा का स्रोत है।

संदर्भ सूची

1. बुटालिया, उ. (1998). द अदर साइड ऑफ साइलेंसः वॉयसेस फ्रॉम द पार्टिशन ऑफ इंडिया. पेंगुइन बुक्स।
2. बुटालिया, उ. (2000). पार्टिशनः द लॉन्ग शैडो. पेंगुइन बुक्स।
3. खान, य. (2007). द ग्रेट पार्टिशनः द मेकिंग ऑफ इंडिया एंड पाकिस्तान. येल यूनिवर्सिटी प्रेस।
4. मेहरा, त. (2009). पंजाब का विभाजनः एक समाजशास्त्रीय दृष्टि. राजकमल प्रकाशन।
5. बोस, स. (2011). फॉल्ट लाइन्स ऑफ नेशनहुड. हार्परकॉलीन्स पब्लिशर्स।
6. प्रसाद, र. (1946). इंडिया डिवाइडेड. हिंद किताब्स।
7. नंदा, बी. आर. (1985). गांधी एंड द पार्टिशन ऑफ इंडिया. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
8. चुगताई, इ. (1958). विभाजन की कहानियां. मकतबा जामिया।
9. शर्मा, के. डी. (2009). विभाजन और हिंदी साहित्य. साहित्य अकादमी।
10. मेहरा, (2018). भारत–पाक विभाजन और मानव पीड़ा. वाणी प्रकाशन।
11. घोष, अ. (1999). शैडो ऑफ द पार्टिशनः स्टोरीज फ्रॉम इंडिया एंड पाकिस्तान. जुबान बुक्स।
12. अहमद, अ. (1972). द रोड टू पाकिस्तान. वैनगार्ड बुक्स।
13. राय, ए. (2004). पोस्ट–पार्टिशन लिटरेचरः ए क्रिटिकल एनालिसिस. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
14. सोबती, क. (1982). जिंदगीनामाः अ क्रॉनिकल ऑफ पार्टिशन. राजकमल प्रकाशन।
15. बर्क, एस. एम. (1990). द पाकिस्तान आइडियाः ए रिव्यू ऑफ हिस्ट्री. वैनगार्ड बुक्स।
16. भारती, ध. (1970). साहित्य और समाजः एक दर्पण. वाणी प्रकाशन।
17. टंडन, पी. (2008). पार्टिशन मेमोरीजः नैरेटिव्स ऑफ इंडियन फ्रीडम. सेज पब्लिकेशंस।
18. पाल, बि. सी. (1981). भारतीय स्वतंत्रता संग्राम और साहित्य. पीपल्स पब्लिशिंग हाउस।
19. सरावगी, अ. (2015). विभाजन और साहित्य. नेशनल पब्लिशिंग हाउस।
20. शौरी, अ. (1998). पार्टिशन एंड कम्युनलिज्म इन इंडिया. रूपा पब्लिकेशंस।
21. शर्मा, स. (2012). विभाजन का साहित्यिक प्रतिबिंब. वाणी प्रकाशन।
22. चंद, त. (1971). भारत विभाजन का दस्तावेज़. पीपल्स पब्लिशिंग हाउस।
23. गर्ग, मृ. (2017). सांप्रदायिक दंगे और साहित्य. राजकमल प्रकाशन।
24. गुहा, र. (2014). इंडिया आफ्टर गांधीः द हिस्ट्री ऑफ द वर्ल्ड्स लार्जेस्ट डेमोक्रेसी. हार्परकॉलीन्स पब्लिशर्स।
25. मुखर्जी, स. (2007). द पार्टिशन आर्काइव. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।